

تفسير معاني  
الْقُرْآنِ كَرِيمِ  
باللغة البنغالية

ترجمه

الدكتور / محمد مجيب الرحمن

إيست ميدو - نيويورك بأمريكا

الأستاذ ورئيس قسم اللغة العربية والتعليم الإسلامي

بجامعة راجشاهي، بنغلاديش (سابقاً)

المدير في مركز التعليم الإسلامي الحكومي (سابقاً)

عضو لجمعية أهل الحديث، بنغلاديش

راجعه

الدكتور / عبد الله فاروق السلفي

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية

الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش (سابقاً)

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

Interpretation of the Meanings

THE QUR'ÂN

In the Bangla Language

By: Prof. Dr. Muhammad Mujibur Rahman



ALL RIGHTS RESERVED © جميع حقوق الطبع محفوظة

No part of this book may be reproduced or utilized in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying and recording or by any information storage and retrieval system, without the written permission of the publisher.

3rd Edition: August 2011

Supervised by:

Abdul Malik Mujahid

HEAD OFFICE

P.O. Box: 22743, Riyadh 11416 K.S.A. Tel: 00966-1-4033962/4043432 Fax: 4021659  
E-mail: darussalam@awalnet.net.sa, riyyadh@dar-us-salam.com Website: www.darussalamksa.com

K.S.A. Darussalam Showrooms:

Riyadh

Olaya branch: Tel 00966-1-4614483 Fax: 4644945

Malaz branch: Tel 00966-1-4735220 Fax: 4735221

Suwaydi branch: Tel: 00966 1 4286641

Suwayilam branch: Tel & Fax-1-2860422

• Jeddah

Tel: 00966-2-6879254 Fax: 6336270

• Madinah

Tel: 00966-04-8234446, 8230038

Fax: 04-8151121

• Al-Khobar

Tel: 00966-3-8692900 Fax: 8691551

• Khamis Mushayt

Tel & Fax: 00966-072207055

• Yanbu Al-Bahr Tel: 0500887341 Fax: 04-3908027

• Al-Buraida Tel: 0503417156 Fax: 06-3696124

U.A.E

• Darussalam, Sharjah U.A.E

Tel: 00971-6-5632623 Fax: 5632624

Sharjah@dar-us-salam.com.

PAKISTAN

• Darussalam, 36 B Lower Mall, Lahore

Tel: 0092-42-724 0024 Fax: 7354072

• Rahman Market, Ghazni Street, Urdu Bazar Lahore

Tel: 0092-42-7120054 Fax: 7320703

• Karachi, Tel: 0092-21-4393936 Fax: 4393937

• Islamabad, Tel: 0092-51-2500237 Fax: 512281513

U.S.A

• Darussalam, Houston

P.O Box: 79194 Tx 77279

Tel: 001-713-722 0419 Fax: 001-713-722 0431

E-mail: houston@dar-us-salam.com

• Darussalam, New York 486 Atlantic Ave, Brooklyn

New York-11217, Tel: 001-718-625 5925

Fax: 718-625 1511

E-mail: darussalamny@hotmail.com

U.K

• Darussalam International Publications Ltd.

Leyton Business Centre

Unit-17, Etloe Road, Leyton, London, E10 7BT

Tel: 0044 20 8539 4885 Fax: 0044 20 8539 4889

Website: www.darussalam.com

Email: info@darussalam.com

• Darussalam International Publications Limited

Regents Park Mosque, 146 Park Road

London NW8 7RG Tel: 0044- 207 725 2246

Fax: 0044 20 8539 4889

AUSTRALIA

• Darussalam: 149 Haldon St, Lakemba (Sydney)

NSW 2195, Australia

Tel: 0061-2-97407188 Fax: 0061-2-97407199

Mobile: 0061-414580813 Res: 0061-2-97580190

Email: abumuaaz@hotmail.com

• The Islamic Bookstore

Ground Floor-165 Haldon Street

Lakemba, NSW 2195, Australia

Tel: 0061-2-97584040 Fax: 0061-2-97584030

Email: info@islamicbookstore.com.au

Web Site: www.islamicbookstore.com.au

CANADA

• Nasiruddin Al-Khattab

2-3415 Dixie Rd, Unit # 505

Mississauga, Ontario L4Y 4J6, Canada

Tel: 001-416-418 6619

FRANCE

• Editions & Librairie Essalam

135, Bd de Ménilmontant- 75011 Paris

Tél: 0033-01- 43 38 19 56/ 44 83

Fax: 0033-01-43 57 44 31

E-mail: essalam@essalam.com.

MALAYSIA

• Darussalam

Int'l Publishing & Distribution SDN BHD

D-2-12, Setiawangsa 11, Taman Setiawangsa

54200 Kuala Lumpur

Tel: 03-42528200 Fax: 03-42529200

Email: darussalam@streamyx.com

Website: www.darussalam.com.my

SRI LANKA

• Darul Kitab 6, Nimal Road, Colombo-4

Tel: 0094 115 358712 Fax: 115-358713

INDIA

• Islamic Books International

54, Tandel Street (North)

Dongri, Mumbai 4000 09, INDIA

Tel: 0091-22-2373 4180

E-mail: ibi@irf.net

• Darussalam, India

31/5, Musvee plaza, Triplicane high road

Tripline, Chennai-600 005, Tamil nadu, Indian

Telefax: +91 44 45566249

Email: info@darussalam.in

Website: www.darussalam.in

SOUTH AFRICA

• Islamic Da'wah Movement (IDM)

48009 Qualbert 4078 Durban, South Africa

Tel: 0027-31-304-6883 Fax: 0027-31-305-1292

E-mail: idm@ion.co.za

# কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

অনুবাদঃ

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

আরবী ও ইসলামিক স্টাডিজ বিভাগ

রাজশাহী বিশ্ববিদ্যালয়, বাংলাদেশ

সদস্য, বাংলাদেশ জম্মিয়তে আহলে হাদীস

প্রাক্তন পরিচালক, ইসলামিক এডুকেশন সেন্টার

ইস্ট মিডো, নিউ ইয়র্ক-১১৫৫৪, যুক্তরাষ্ট্র

সম্পাদনায়ঃ

প্রফেসর ড. আব্দুল্লাহ ফারুক সালাফি

প্রাক্তন অধ্যাপক ও সভাপতি

ডিপার্টমেন্ট অব দা'ওয়া এন্ড ইসলামীক স্টাডিজ

ইন্টারন্যাশনাল ইসলামীক ইউনিভার্সিটি

চিটাগং, বাংলাদেশ।



দারুসসালাম

রিয়াদ • জেদ্দা • আল-খোবার • শারজাহ

লাহোর • লন্ডন • হিউস্টন • নিউ ইয়র্ক

কুরআনুল কারীম

বাংলা তাফসীর

প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

প্রথম প্রকাশ

নভেম্বরঃ ২০০১ ইংরেজী

রামায়ানঃ ১৪২২ হিজরী

অগ্রহায়ণঃ ১৪০৮ বাংলা

তৃতীয় সংস্করণ

জানুয়ারীঃ ২০০৭ ইংরেজী

জিলহজ্জঃ ১৪২৭ হিজরী

পৌষঃ ১৪১৩ বাংলা

গ্রন্থস্বত্বঃ প্রকাশকের

সদর দফতর

পোঃ বক্সঃ ২২৭৪৩, রিয়াদঃ ১১৪১৬, সৌদি আরব ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪০৩৩৯৬২-৪০৪৩৪৩২

ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-১-৪০২১৬৫৯

E-mail: [Darussalam@awalnet.net.sa](mailto:Darussalam@awalnet.net.sa) Website: <http://www.dar-us-salam.com>

শাখা সমূহঃ

বিক্রয় কেন্দ্রসমূহ

রিয়াদ, সৌদি আরব

উলাইয়াঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৬১৪৪৮৩ ফ্যাক্সঃ ৪৬৪৪৯৫৫

মালায়ঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-৪৭৩৫২২০ ফ্যাক্সঃ ৪৭৩৫২২১

সুলাইমঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-১-২৮৬০৪২২

জেদ্দাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-২-৬৮৭৯২৫৪ ফ্যাক্সঃ ৬৩৩৬২৭০

মদীনাঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৫০৩৪১৭১৫৫ ফ্যাক্সঃ ০৪-৮১৫১১২১

আল-খোবারঃ ফোনঃ ০০৯৬৬-৩-৮৬৯২৯০০ ফ্যাক্সঃ ৮৬৯১৫৫১

খামিস মুশীতঃ ফোন+ফ্যাক্সঃ ০০৯৬৬-০৭২২০৭০৫৫

আরব আমীয়াত

ফোনঃ ০০৯৭১-৬-৫৬৩২৬২৩ ফ্যাক্সঃ ৫৬৩২৬২৪

E-mail: [Sharjah@dar-us-salam.com](mailto:Sharjah@dar-us-salam.com)

পাকিস্তান

দারুসসালাম, ৩৬/বি লয়ার মল, লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭২৪ ০০২৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩৫৪০৭২

রহমান মার্কেট, গজনী স্ট্রীট, উর্দুবাাজার লাহোর

ফোনঃ ০০৯২-৪২-৭১২০০৫৪ ফ্যাক্সঃ ৭৩২০৭০৩

কারাচী ফোনঃ ০০৯২-২১-৪৩৯৩৯৩৬ ফ্যাক্সঃ ৪৩৯৩৯৩৭

ইসলামাবাদ ফোনঃ ০০৯২-৫১-২৫০০২৩৭

যুক্তরাষ্ট্র

দারুসসালাম, হিউস্টন

পি.ও. বক্সঃ ৭৯১৯৪ টিএক্স ৭৭২৭৯

ফোনঃ ০০১-৭১৩-৭২২০৪১৯ ফ্যাক্সঃ ৭২২০৪৩১

E-mail: [sales@dar-us-salam.com](mailto:sales@dar-us-salam.com)

দারুসসালাম, নিউ ইয়র্ক

৪৮৬ আটলান্টিক এভিনিউ, ক্রকলীন

নিউইয়র্ক ১১২১৭, ফোনঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ৫৯২৫

ফ্যাক্সঃ ০০১-৭১৮-৬২৫ ১৫১১

E-mail: [darussalamny@hotmail.com](mailto:darussalamny@hotmail.com)

যুক্তরাজ্য

লন্ডনঃ দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

লিওন বিজনেস সেন্টার

ইউনিট-১৭, ইটলো রোড, লিওন, লন্ডন, ই১০ ৭ বিটি

ফোনঃ ০০৪৪ ২০ ৮৫৩৯ ৪৮৮৫ ফ্যাক্সঃ ৮৫৩৯ ৪৮৮৯

Website: [www.darussalam.com](http://www.darussalam.com)

E-mail: [info@darussalam.com](mailto:info@darussalam.com)

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

রিজেন্ট পার্ক মসজিদ, ১৪৬ পার্ক রোড,

লন্ডন এনডারলিউ চ ৭ আর জি

ফোনঃ ০০৪৪-২০৭ ৭২৫ ২২৪৬

কানাডা

ইসলামীক বুকস সার্ভিস

২২০০ সাউথ শেরিডান ওয়ায়ে মিসিসাগা

ওয়ানটারিও কানাডা এলএকে ২সিচ

ফোনঃ ০০১-৯০৫-৪০৩৮৪০৬ এক্সিট-২১৮

ফ্যাক্সঃ ৯০৫-৮৪০৯

মালয়েশিয়া

দারুসসালাম ইন্টারন্যাশনাল পাবলিকেশন লিমিটেড

১০৯/এ, জালাল এসএস২১/১এ, ডামানসারা উটামা

৪৭৪০০, পিটালিল জায়া, সিলাপুর, দারুল ইহসান

মালয়েশিয়া, ফোনঃ ০০৬০৩-৭৭১০ ৯৭৫০

ফ্যাক্সঃ ৭৭১০০৭৪৯

E-mail: [Darussalam@streamyx.com](mailto:Darussalam@streamyx.com)

ফ্রান্স

ইসলাম লাইব্রেরী

১৩৫, বিডি ডি মেনিলমোন্টেস্ট-৭৫০১১ প্যারিস

ফোনঃ ০০৩৩-০১-৪৩ ৩৮ ৫৬/ ৪৪ ৮৩

ফ্যাক্সঃ ০০৩৩-০১-৪৩ ৫৭ ৪৪ ৩১

E-mail: [esslam@esslam.com](mailto:esslam@esslam.com)



# সূচী পত্র

১. সূরা ফাতিহা .....	০1	২৯. সূরা আনকাবুত .....	734
২. সূরা বাকারাহ .....	04	৩০. সূরা রুম .....	747
৩. সূরা আল-ইমরান .....	91	৩১. সূরা লোকমান .....	756
৪. সূরা আন-নিসা .....	143	৩২. সূরা সাজ্দাহ .....	763
৫. সূরা মায়িদা .....	190	৩৩. সূরা আহযাব .....	768
৬. সূরা আন'আম .....	232	৩৪. সূরা সাবা .....	785
৭. সূরা 'আরাফ .....	281	৩৫. সূরা ফাতির .....	795
৮. সূরা আনফাল .....	333	৩৬. সূরা ইয়াসীন .....	803
৯. সূরা তাওবা .....	352	৩৭. সূরা সাফফাত .....	814
১০. সূরা ইউনুস .....	391	৩৮. সূরা সোয়াদ .....	829
১১. সূরা হূদ .....	416	৩৯. সূরা যুমার .....	839
১২. সূরা ইউসুফ .....	445	৪০. সূরা মু'মিন .....	852
১৩. সূরা রা'দ .....	469	৪১. সূরা হা-মীম আসসাজ্দাহ .....	867
১৪. সূরা ইবরাহীম .....	479	৪২. সূরা শূরা .....	878
১৫. সূরা হিজর .....	493	৪৩. সূরা মুখরুফ .....	888
১৬. সূরা নাহল .....	504	৪৪. সূরা দুখান .....	900
১৭. সূরা বানী ইসরাইল .....	529	৪৫. সূরা জাসিয়া .....	905
১৮. সূরা কাহ্ফ .....	549	৪৬. সূরা আহক্বাফ .....	912
১৯. সূরা মারইয়াম .....	573	৪৭. সূরা মুহাম্মাদ .....	920
২০. সূরা ত্বা-হা .....	587	৪৮. সূরা ফাতহ .....	928
২১. সূরা আশিয়া .....	607	৪৯. সূরা হুজুরাত .....	935
২২. সূরা হাজ্জ .....	623	৫০. সূরা ক্বা'ফ .....	939
২৩. সূরা মু'মিনুন .....	639	৫১. সূরা যারিয়াত .....	944
২৪. সূরা নূর .....	652	৫২. সূরা তূর .....	951
২৫. সূরা ফুরকান .....	668	৫৩. সূরা নাজম .....	955
২৬. সূরা শুআ'রা .....	680	৫৪. সূরা কামার .....	962
২৭. সূরা নামল .....	700	৫৫. সূরা রহমান .....	968
২৮. সূরা কাসাস .....	715	৫৬. সূরা ওয়াকি'আহ .....	974



الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ  
International Islamic University Chittagong

Ref :

Date : 13 - 12 - 2005

## إلى من يهمه الأمر

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده، وبعد!

فإن الأستاذ الدكتور محمد مجيب الرحمن أستاذ ورئيس القسم العربي والدراسات الإسلامية بجامعة راجشاهي وعضو جمعية أهل الحديث ، بنغلاديش ومدير قسم التعليم الإسلامي العالي بميدو الشرقية بالولايات المتحدة الأمريكية أحد الدعاة الجهادية وقادة الفكر الإسلامي في أرجاء بنغلاديش وله شهرة واسعة في الأوساط العلمية وهو من المجيدين المتقنين لشتى اللغات وهو كذلك صاحب خبرة طويلة وتجارب ممتصة في مجال العلوم الشرعية وأنه قام بترجمة معاني القرآن الكريم باللغة البنغالية المسمى -القرآن الكريم بنغلا تفسير- ترجمة صحيحة وافية حيث إنها تنقل إلى القراء الكرام روح القرآن وأهدافه النبيلة وتعاليمه السمحة بأسلوب رصين وذلك خلال فترة عمله ومحاضراته في جامعة راجشاهي الحكومية بنغلاديش ثم خلال فترة عمله في المركز الثقافي الإسلامي بمدينة نيو يورك، الولايات المتحدة الأمريكية وإنني أرى أن الترجمة المذكورة تستحق الطبع والنشر في داخل البلاد وخارجها ليستفيد بها المسلمون الناطقون باللغة البنغالية وإنهم في أمس الحاجة إلى مثل هذه الترجمة التي وفّت بالغرض شرعياً ولغوياً وأدبياً وبلاغياً وقد قدم صاحبها خدمة جليلة في حقل تفسير القرآن الكريم باللغة البنغالية كما أن المذكور يتحلى بالأخلاق الفاضلة والسير الحميدة ويتمسك بالعقيدة السالمة من شوائب الشرك والبدعة. والله ولي التوفيق وصلى الله على نبيينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين .

كتبه

الحجيم فاروق السلفي  
(د. عبد الله فاروق السلفي)

الأستاذ المساعد ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية  
الجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش.

Head  
Dept. of Da'wah & Islamic Studies  
International Islamic University Chittagong

## প্রকাশকের নিবেদন

সমস্ত প্রশংসা নিবেদন করছি বিশ্বজগতের রব, আল্লাহর জন্য যিনি আল-কুরআন অবতীর্ণ করেছেন মানব জাতির হেদায়েত ও কল্যাণের নিমিত্তে। দরুদ ও সালাম মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি এবং তাঁর পরিবার ও সাহাবীদের উপর বর্ষিত হোক।

বিশ্বে এখন প্রায় পঁয়ত্রিশ/চল্লিশ কোটি বাংলাভাষী রয়েছে। তাদের বেশিরভাগই হলেন মুসলমান। তারা দেশে-বিদেশে নিজ ভাষায় আল-কুরআন অধ্যয়ন করতে আগ্রহী। কিয়ামত পর্যন্ত আল-কুরআন মানবতার মুক্তির দিশারী এতে কোন সন্দেহ নেই। দুনিয়ার শান্তি ও আখেরাতের মুক্তির জন্য-এর অধ্যয়ন, চর্চা ও বাস্তবায়ন অবশ্যম্ভাবী।

উল্লেখ্য যে, আল-কুরআনের অনুবাদ গ্রন্থের মর্যাদা (মূল) কুরআনের সমপর্যায়ভূক্ত নয়। তবুও অনুবাদ মানুষকে স্ব-ভাষায় কুরআনের ভাবার্থ বুঝতে ও তার দ্বারা উপকৃত হতে এবং দুনিয়া ও আখেরাতের জীবনকে সমৃদ্ধশালী করতে সাহায্য করে।

এ তরজমা দারুসসালামের দীর্ঘদিনের আশা-আকাঙ্ক্ষার বাস্তবায়ন। এ মহৎ কাজে বাংলাদেশের বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান তাঁর অনূদিত তাফসীর ইবনে কাসীর-এর কুরআনের তরজমা অংশটি দিয়ে আমাদের সে ইচ্ছা পূর্ণ করেছেন।

বাংলাভাষায় কুরআনুল কারীমের এই নির্ভরযোগ্য তরজমা বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকাদের হাতে তুলে দিতে পারায় আমি সর্বপ্রথমে আল্লাহ রাব্বুল আলামীনের শুকরিয়া আদায় করছি।

প্রকাশনা পরিষদের অক্লান্ত পরিশ্রমের ফলে সংশোধিতরূপে সত্ত্বর-এর প্রকাশনা সম্ভব হয়েছে। ড. আব্দুল্লাহ ফারুক, মুহাম্মাদ আব্দুর রব আফফান, আজমল হুসাইন, সাইফুল ইসলাম ও জনাব মুহিববুর রহমান, বর্ণবিন্যাসকারী ও ডিজাইনার জনাব আসাদুল্লাহসহ যারা এ অনুবাদ প্রকাশনায় সক্রিয়ভাবে সহযোগিতা করেছেন তাদের সকলের প্রতি রইল আমার আন্তরিক কৃতজ্ঞতা ও শুভেচ্ছা।

হাদীসের সাহায্য ছাড়া কুরআনের অর্থ অনুধাবন করা যায় না। তাই প্রয়োজনীয় ক্ষেত্রে সহীহ হাদীসের অনুবাদের মাধ্যমে টীকা সংযোজন করা হয়েছে। তবে হাদীস অনুবাদের ক্ষেত্রে মূল আরবী গ্রন্থ দেখে করা হয়েছে। অধিকাংশ হাদীসই সহীহ আল-বুখারী থেকে নেয়া হয়েছে।

বাংলাভাষী সকল পর্যায়ের মুসলমান ভাইদের পবিত্র কুরআনের অর্থ বুঝে পড়ার আগ্রহের প্রতি লক্ষ্য রেখে তরজমা সহজ, বোধগম্য ও প্রাঞ্জল করার চেষ্টা করা

৫৭. সূরা হাদীদ.....	981	৮৭. সূরা আ'লা .....	1088
৫৮. সূরা মুজাদালাহ.....	988	৮৮. সূরা গাশিয়াহ.....	1089
৫৯. সূরা হাশর.....	993	৮৯. সূরা ফাজর.....	1091
৬০. সূরা মুমতাহিনাহ.....	1000	৯০. সূরা বালাদ.....	1094
৬১. সূরা সাফফ.....	1004	৯১. সূরা শামস.....	1096
৬২. সূরা জুমুআ'হ.....	1007	৯২. সূরা লাইল.....	1097
৬৩. সূরা মুনাফিকুন.....	1009	৯৩. সূরা দুহা.....	1099
৬৪. সূরা তাগাবুন.....	1012	৯৪. সূরা আলাম নাশরাহ.....	1100
৬৫. সূরা তালাক.....	1015	৯৫. সূরা তীন.....	1100
৬৬. সূরা তাহরীম.....	1019	৯৬. সূরা আ'লাক.....	1101
৬৭. সূরা মূলক.....	1023	৯৭. সূরা কাদর.....	1103
৬৮. সূরা কলম.....	1027	৯৮. সূরা বাইয়্যিনাহ.....	1103
৬৯. সূরা হাক্কাহ.....	1032	৯৯. সূরা যিলযাল.....	1104
৭০. সূরা মা'আরিজ.....	1037	১০০. সূরা আদিয়াত.....	1105
৭১. সূরা নূহ.....	1040	১০১. সূরা কা'রি'আহ.....	1106
৭২. সূরা জ্বীন.....	1044	১০২. সূরা তাকাসুর.....	1107
৭৩. সূরা মুযাম্মিল.....	1047	১০৩. সূরা আসর.....	1108
৭৪. সূরা মুদদাস্‌সির.....	1050	১০৪. সূরা হুমাযাহ.....	1108
৭৫. সূরা কিয়ামাহ.....	1055	১০৫. সূরা ফীল.....	1109
৭৬. সূরা দাহর.....	1058	১০৬. সূরা কুরাইশ.....	1109
৭৭. সূরা মুরসালাত.....	1061	১০৭. সূরা মাউন.....	1110
৭৮. সূরা নাবা.....	1066	১০৮. সূরা কাওসার.....	1111
৭৯. সূরা নাযি'আত.....	1069	১০৯. সূরা কা'ফিরুন.....	1111
৮০. সূরা আ'বাসা.....	1072	১১০. সূরা নাসর.....	1112
৮১. সূরা তাকভীর.....	1075	১১১. সূরা লাহাব.....	1112
৮২. সূরা ইনফিতার.....	1078	১১২. সূরা ইখলাস.....	1113
৮৩. সূরা মুতাফ্‌ফিফীন.....	1080	১১৩. সূরা ফালাক.....	1114
৮৪. সূরা ইনশিকাক.....	1083	১১৪. সূরা নাস.....	1115
৮৫. সূরা বুরূজ.....	1085		
৮৬. সূরা তা'-রিক.....	1086		



## অনুবাদকের আরম্ভ

মানবকুলের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ তারাই যারা পবিত্র কুরআনের শিক্ষা গ্রহণ ও শিক্ষা দানে নিয়োজিত। নবী আকরামের (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) এই পবিত্র বাণী সকল যুগের জ্ঞান-তাপস ও মনীষীদের উদ্ধুদ্ধ করেছে পাক কুরআনের অনুবাদ ও ব্যাখ্যা প্রণয়ন করার কাজে।

আল্লাহ পাকের লাখো শুকরিয়া, ‘তাকসীর ইবনে কাসীরের’ ব্যাপক জনপ্রিয়তা, কল্যাণকারিতা এবং অপরিমিত গুরুত্বের কথা অনুধাবন করে তা বাংলায় ভাষান্তরিত করে প্রায় বিশ বছর আগে বাংলাভাষী পাঠক-পাঠিকার হাতে অর্পণ করতে সক্ষম হয়েছিলাম।

আন্তর্জাতিক খ্যাতি সম্পন্ন প্রকাশনা প্রতিষ্ঠান ‘দারুসসালাম’ সেই তাকসীর থেকে কুরআনের ‘তরজমা অংশটুকু’ প্রকাশের উদ্যোগ নেয় ২০০১ সালে। এবার তারা পুনঃপ্রকাশের উদ্যোগ নিয়েছে এর জনপ্রিয়তার কারণে। ভবিষ্যতে ‘পূর্ণাঙ্গ তাকসীর’ প্রকাশের পরিকল্পনা তাদের রয়েছে। আল্লাহ তা’আলা তাদের কামিয়াব করুন এবং উপযুক্ত যা’জা দান করুন।

আপ্রাণ চেষ্টা সত্ত্বেও একান্ত অনিচ্ছাকৃতভাবে এতে কিছু মুদ্রণ প্রমাদ, তরজমার উপস্থাপনা এবং অন্যান্য ত্রুটি-বিচ্যুতি পরিলক্ষিত হয়েছিল। যেসব বিষয়ে সুধী পাঠক মহলের পক্ষ থেকে অনুবাদকের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হয়েছে, (মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন)। সেগুলো পরম কৃতজ্ঞতা ও ধন্যবাদসহ গৃহীত হয়েছে। এই কল্যাণময় কাজটিকে আরো উন্নতমানের এবং একান্ত রুচিশীলভাবে সম্পন্ন করে পরিমার্জিত আকারে প্রকাশ করা হয়েছে।

এই তরজমা যদি চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকার মনের কোণে রুহানী আনন্দ দিয়ে কুরআনের মহাশিক্ষাকে তাদের দৈনন্দিন জীবনের প্রতিটি পর্যায়ে পূর্ণাঙ্গ রূপলাভের সংকল্প জাগিয়ে তুলতে পারে, আর এর আলোকেই যদি তারা গড়ে তুলতে পারেন তাদের জীবনধারা, তবেই পরিশ্রম ও সাধনাকে আমি সফল ও সার্থক মনে করবো।

আটলান্টিক, নিউজার্সি, মার্কিন যুক্তরাষ্ট্র

বিনয়াবনত  
প্রফেসর ড. মুহাম্মাদ মুজীবুর রহমান

হয়েছে, যাতে তেলাওয়াতের সাথে সাথে তাঁরা কুরআন মাজিদের অর্থও বুঝতে পারেন।

২০০১ সালে প্রকাশিত তরজমায় যেসব ত্রুটি-বিচ্যুতির ব্যাপারে চিন্তাশীল পাঠক-পাঠিকা ও গবেষকমণ্ডলী পরামর্শ দিয়েছেন তাঁদেরকে আন্তরিক ধন্যবাদ জানাচ্ছি, মহান আল্লাহ তাদেরকে উত্তম বিনিময় দান করুন। এবারের প্রকাশনায় ঐ সব ত্রুটি সংশোধনের যথাসাধ্য চেষ্টা করা হয়েছে।

মানুষ ভুলের উর্ধ্বে নয়, সে হিসেবে এই অনুবাদেও ভুল-ভ্রান্তি থাকতে পারে। সুবিজ্ঞ পাঠক-পাঠিকার নিকট অনুরোধ অনুবাদে অনিচ্ছাকৃতভাবে কোনরূপ ভুল ধরা পড়লে দারুসসালাম দফতরে মেহেরবানী করে জানাবেন। ইনশাআল্লাহ ভুলের সংশোধন আগামী সংস্করণে অবশ্যই করা হবে।

পবিত্র আল-কুরআনের বাংলা এ তরজমা গ্রন্থটি দ্বারা ইসলামকে জানার ব্যাপারে বাংলাভাষী জনগণ উপকৃত হলে আমাদের শ্রমও সার্থক হবে। পাঠকদের নিকট এটি গৃহীত হবে বলে আশা করছি। আল্লাহ আমাদের উত্তম আমলগুলো কবুল করুন এবং ভুল-ত্রুটিগুলো ক্ষমা করুন। আমীন।

রিয়াদঃ জানুয়ারী, ২০০৭

আব্দুল মালিক মুজাহিদ  
জেনারেল ম্যানেজার

## সূরাঃ ফাতিহা মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকুঃ ১)

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি  
পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি  
জগতসমূহের প্রতিপালক। ২

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয়  
দয়ালু।

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত  
করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য  
প্রার্থনা করি।

১। “ফাতিহা” (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুসহাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর দ্বারাই কিরআত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ ১)

২। আবু সাঈদ ইবনুল মু‘আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ তা‘আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ “আল্লাহ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহ্বানে সাড়া নাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।” (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)

তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বপূর্ণ দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি হে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে ‘সাবউল মাসানী’ বা বার বার পঠিত এ সাতটি অম্বায়ত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে “সাবউল মাসানী” বলা হয় এ জন্য যে সূরাটির মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

## سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا، رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ١

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ٢

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ٣

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ٤

إِلَيْكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ٥

## সহায়ক গ্রন্থ

- ১। “মিসবাহুল মুনীর” (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
- ২। তাফসীরে জালালাইন
- ৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
- ৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
- ৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
- ৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।



## সূরা: ফাতিহা' মাক্কী

(আয়াতঃ ৭ রুকুঃ ১)

১. আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি  
পরম করুণাময় ও অতি দয়ালু।

২. আল্লাহর জন্য সমস্ত প্রশংসা যিনি  
জগতসমূহের প্রতিপালক। ২

৩. যিনি পরম করুণাময়, অতিশয়  
দয়ালু।

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

৫. আমরা শুধুমাত্র আপনারই ইবাদত  
করি এবং আপনারই নিকট সাহায্য  
প্রার্থনা করি।

১। “ফাতিহা” (ফাতিহা অর্থঃ সূচনা, ভূমিকা ও সূত্রপাত করা)। এ সূরাটিকে ফাতিহাতুল কিতাব ও উম্মুল কিতাবও বলা হয়। কারণঃ মুসহাফের (কুরআন মজিদের) প্রথমে এ সূরাটি লিখিত এবং নামাযের মধ্যে এর দ্বারা ইকর'আত আরম্ভ করা হয় বলেও একে এ নামে অভিহিত করা হয়েছে। (বুখারী কিতাবুত তাফসীর, ফাতিহাতুল কিতাব অনুচ্ছেদ ১)

২। আবু সাঈদ ইবনুল মু'আল্লা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেছেনঃ (একদিন) আমি মসজিদে নববীতে (নফল) নামায পড়ছিলাম। ঠিক এ সময় রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাকে ডাকলেন; কিন্তু আমি তাঁকে কোন জবাব দিলাম না। পরে গিয়ে আমি তাঁকে বললামঃ হে আল্লাহর রাসূল! (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [আপনি যে সময় আমাকে ডেকেছিলেন] আমি তখন নামায পড়ছিলাম। রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) একথা শুনে তাকে বললেনঃ আল্লাহ তা'আলা কি বলেননিঃ অর্থঃ “আল্লাহ এবং রাসূল (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর আহ্বানে সাড়া দাও, যখন তোমাদেরকে কোন কাজের প্রতি আহ্বান করেন।” (সূরা আনফাল, আয়াতঃ ২৪)

তারপর আমাকে বললেনঃ তুমি মসজিদ থেকে বের হওয়ার আগে আমি তোমাকে কুরআনের এমন একটি সূরা শিখিয়ে দেবো যা গুরুত্বের দিক দিয়ে সবচাইতে বড়। তারপর তিনি আমার হাত চেপে ধরলেন। যখন তিনি মসজিদ থেকে বেরিয়ে যেতে উদ্যত হলেন তখন আমি তাঁকে বললামঃ আপনি কি বলেননি যে, কুরআনের সবচাইতে গুরুত্বপূর্ণ সূরা আমাকে শিখিয়ে দেবেন? তিনি বললেনঃ সেই সূরাটি হলো আলহামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন। আমাকে ‘সাবউল মাসানী’ বা বার বার পঠিত এ সাতটি আয়াত ও মহান কুরআন দান করা হয়েছে। (অর্থাৎ সূরা ফাতিহাকে “সাবউল মাসানী” বলা হয় এ জন্য যে সূরাটিতে মোট সাতটি আয়াত আছে, যা নামাযে বার বার পঠিত হয়ে থাকে।) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৪)

## سُورَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّانَهَا، رُكُوعُهَا

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ①

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ②

الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ③

مَلِكِ يَوْمِ الدِّينِ ④

إِنَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ ⑤

## সহায়ক গ্রন্থ

- ১। “মিসবাহুল মুনীর” (সংক্ষিপ্ত তাফসীর ইবনে কাসীর)
- ২। তাফসীরে জালালাইন
- ৩। তাইসীর আল-কারীমুর রহমান
- ৪। আল-কুরআন ওয়ার্ড বাই ওয়ার্ড (উর্দু)
- ৫। কুরআনুল কারীম (মাওলানা আব্দুল হাকীম কর্তৃক রচিত)
- ৬। টীকাঃ হাদীসসমূহ বুখারী ও মুসলিম।

৬. আমাদেরকে সরল সঠিক পথ-  
প্রদর্শন করুন।

إِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيمَ ﴿٦﴾

৭. তাদের পথ, যাদের প্রতি আপনি  
অনুগ্রহ করেছেন; তাদের নয় যাদের  
প্রতি আপনার গযব বর্ষিত হয়েছে,<sup>১</sup>  
এবং তাদেরও নয় যারা পথভ্রষ্ট।<sup>২-৩-৪</sup>

صِرَاطَ الَّذِينَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۚ غَيْرِ  
الْمَغْضُوبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّالِّينَ ﴿٧﴾

১। আদি বিন হাতেম (রাযিআল্লাহু আনহু) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) থেকে বর্ণনা করেন, তিনি বলেনঃ (مَغْضُوبٌ عَلَيْهِمْ) দ্বারা ইয়াহুদী সম্প্রদায়কে বুঝানো হয়েছে। (যারা সত্যকে জেনে শুনেও তা থেকে দূরে সরে গেছে এবং ইচ্ছাকৃতভাবে আমল পরিত্যাগ করেছে।) আর (ضَالِّينَ) দ্বারা নাসারা বা খ্রিস্টানগণকে বুঝানো হয়েছে। (যাদের সঠিক পথ সম্পর্কে কোন ধারণা ও জ্ঞান নেই।) (তিরমিযী)

২-৩-৪। আব্দুল্লাহ ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর প্রতি ওহী অবতীর্ণ হবার পূর্বে বালদাহ নামক স্থানের নিম্নভাগে যারুদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলের সাথে নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সাথে সাক্ষাত হয়। তারপর (কুরাইশদের পক্ষ থেকে) নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-এর সামনে দস্তুরখান বিছানো হলো। তিনি তা থেকে খেতে অস্বীকার করলেন (এবং যারুদের সামনে ঠেলে দিলেন; কিন্তু তিনিও তা খেতে অস্বীকার করলেন।) অতঃপর যারুদ (কুরাইশদের লক্ষ্য করে) বললেন, তোমাদের মূর্তির নামে তোমরা যা যবেহ কর তা আমি কিছুতেই খেতে পারি না। আমি তো কেবলমাত্র তাই খেয়ে থাকি যাতে যবেহ করার সময় আল্লাহর নাম উচ্চারণ করা হয়। যারুদ ইবনে আমর কুরাইশদের যবেহের নিন্দা করতেন এবং তাদের উক্ত আচরণের প্রতিবাদ ও তার ক্রটির প্রতি ইঙ্গিত করে বলতেন, বকরীকে সৃষ্টি করলেন আল্লাহ এবং তিনিই তাঁর আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, তিনিই তার জন্য মাটি থেকে ঘাস ও লতা-পাতা উৎপন্ন করেন। এতো কিছু পরও তোমরা তাকে গাইরুন্নাহর নামে যবেহ কর। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৬)

ইবনে উমর থেকে (অপর এক সনদে) বর্ণিত যারুদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইল সত্য দ্বীন সম্পর্কে জানা ও তার অনুসরণ করার জন্য শাম (সিরিয়া) দেশে গিয়ে এক ইয়াহুদী আলেমের সাথে সাক্ষাত করেন এবং তাকে তাদের দ্বীন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে বললেন, আমি হয়তোবা আপনাদের দ্বীন গ্রহণ করতে পারি। সুতরাং আমাকে (আপনাদের দ্বীন সম্পর্কে) কিছু বলুন। ইয়াহুদী আলেম বললেন, আপনি আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না যে পর্যন্ত আল্লাহর আযাব থেকে আপনার অংশ আপনি গ্রহণ না করেন। যারুদ বললেন আমি তো আল্লাহর আযাব থেকে (বাঁচার জন্যই) ভয়ে পালিয়ে এসেছি। আল্লাহ পাকের আযাব বিন্দুমাত্রও সহ্য করার ক্ষমতা আমার নেই এবং তা বরদাস্ত করার সাধ্যও রাখি না। তাহলে অন্য কোন ধর্ম সম্পর্কে (মেহেরবানী) করে আমাকে পথ দেখাতে পারবেন কি? ইয়াহুদী আলেম বললেনঃ দ্বীনে হানীফ ছাড়া অন্য কোন সত্য দ্বীন আমার জানা নেই। যারুদ বললেনঃ দ্বীনে হানীফ কি? তিনি বললেন তাহল ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর আনিত দ্বীন। তিনি (ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম) ইয়াহুদী কিংবা খ্রিস্টান (কোন দলেরই) ছিলেন না। তিনি একমাত্র আল্লাহ ব্যতীত অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। অতঃপর যারুদ সেখান থেকে বের হয়ে এক খ্রিস্টান আলেমের সঙ্গে সাক্ষাত করলেন এবং তাঁকেও পূর্বের ন্যায় জিজ্ঞেস করলেন। উক্ত আলেম বললেন যে পর্যন্ত আপনি আল্লাহর লানতের অংশ গ্রহণ না করবেন সে পর্যন্ত আমাদের ধর্মের অনুসারী হতে পারবেন না। যারুদ বললেন আল্লাহর লানত থেকে (মুক্তি পাওয়ার জন্যই) আমি পালিয়ে বেড়াচ্ছি। আল্লাহর লানত কিংবা তাঁর গযবের বিন্দুমাত্রও আমি বরদাশত করতে পারব না, না আমার তা বরদাশত করার কোন সাধ্য আছে। অতঃপর উক্ত আলেমকেও বললেনঃ তাহলে আপনি কি আমাকে অন্য কোন দ্বীন (ধর্ম)-এর কথা বলে দিতে পারবেন? উত্তরে উক্ত আলেম

বললেন, অন্য কোন ধর্মের কথা আমি জানি না, তবে (দ্বীনে) হানীফ ব্যতীত। যারুদ জিজ্ঞাসা করলেন, হানীফ কি? তিনি বললেন, তা'হল ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর আনিত দ্বীন। তিনি ইয়াহুদী ও ছিলেন না এবং খ্রিস্টানও ছিলেন না। তিনি আল্লাহ ছাড়া অন্য কিছুই ইবাদত করতেন না। যারুদ যখন দেখলেন যে ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর দ্বীনের সত্যতার ব্যাপারে তারা সকলেই একমত, তাদের মন্তব্য শুনে বেরিয়ে এলেন এবং বাহিরে এসে দু'হাত তুলে বললেন, হে আল্লাহ! আমি তোমাকে সাক্ষি রেখে বলছি যে, নিশ্চয় আমি ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর দ্বীনের প্রতি রয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৩৮২৮)

\* লাইছ বলেন, হিশাম তার পিতা ও আসমা বিনতে আবু বকরের বরাতে দিয়ে আমাকে লিখেছেন যে, আসমা বলেনঃ একদিন, আমি যারুদ ইবনে আমর ইবনে নুফাইলকে দেখলাম যে, তিনি কা'বা ঘরের সাথে নিজের পিঠ লাগিয়ে দাঁড়িয়ে (কুরাইশদেরকে লক্ষ্য করে) বলছেন, হে কুরাইশ দল! আল্লাহর কসম! আমি ছাড়া তোমাদের কেউ ইব্রাহীম (আলাইহিসসালাম)-এর দ্বীনের অনুসারী নয়। আর তিনি জীবন্ত প্রেরিত নবজাত শিশুকন্যাকে জীবিত করতেন। যখন কোন ব্যক্তি তার মেয়েকে হত্যা করতে চাইত তখন তিনি তাকে বলতেন, একে হত্যা করো না। তোমার পরিবর্তে আমি তার ভরণ-পোষণের ভার নেব। এ বলে তিনি তাকে নিয়ে যেতেন। মেয়েটা যখন বড় হতো, তিনি তার পিতাকে বলতেন, তুমি চাইলে আমি মেয়েটাকে তোমাকে দিয়ে দিব। আর তুমি যদি চাও তবে আমিই মেয়েটার ভরণ-পোষণ করে যাব। (বুখারী, হাদীস নং ৩৪২৮)

\* উবাদা বিন সামিত (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি নামাযে সূরা ফাতিহা পাঠ করবে না তার নামাযই হবে না। (বুখারী, হাদীস নং ৭৫৬)

\* আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ নিশ্চয়ই রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ যখন ইমাম সাহেব আমীন বলে তখন তোমরাও আমীন বল। কেননা (ঐ সময়) ফেরেশতারাও আমীন বলে থাকে। যে ব্যক্তির আমীন বলা ফেরেশতাদের আমীন বলার সাথে মিলে যায় তার পূর্ববর্তী গোনাহ মাফ করে দেয়া হয়। (আমীন অর্থ হচ্ছে “হে আল্লাহ! আপনি কবুল করুন।”) (বুখারী, হাদীস নং ৪৪৭৫)



৬. নিশ্চয় যারা অবিশ্বাস করেছে, তাদের তুমি সতর্ক কর বা না কর, উভয়টা তাদের জন্য সমান, তারা বিশ্বাস স্থাপন করবে না।

৭. আল্লাহ তাদের অন্তরসমূহের উপর ও তাদের কর্ণসমূহের উপর মোহরাংকিত করে দিয়েছেন এবং তাদের চক্ষুসমূহের উপর আবরণ পড়ে আছে এবং তাদের জন্য রয়েছে গুরুতর শাস্তি।

৮. আর মানুষের মধ্যে এমন লোক আছে যারা বলে, আমরা আল্লাহর উপর এবং বিচার দিবসের উপর ঈমান এনেছি, অথচ তারা মোটেই ঈমানদার নয়।

৯. তারা আল্লাহ ও মুমিনদের সঙ্গে প্রতারণা করে, প্রকৃত অর্থে তারা নিজেদের ব্যতীত আর কারও সঙ্গে প্রতারণা করে না, অথচ তারা এ সম্বন্ধে বোধই রাখে না।

১০. তাদের অন্তরে ব্যাধি (রোগ) রয়েছে, উপরন্তু আল্লাহ তাদের ব্যাধি আরও বাড়িয়ে দিয়েছেন এবং তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে যেহেতু তারা মিথ্যা বলতো।

১১. এবং যখন তাদেরকে বলা হয়ঃ তোমরা পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করো না তখন তারা বলে আমরা তো শুধু সংশোধনকারী।

১২. সাবধান! তারাই অশান্তি সৃষ্টিকারী; কিন্তু তারা বুঝে না।

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنذَرْتَهُمْ  
أَمْ لَمْ تُنذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ ①

خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ  
وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَلَهُمْ عَذَابٌ  
عَظِيمٌ ②

وَمِنَ النَّاسِ مَن يَقُولُ آمَنَّا بِاللَّهِ  
وَبِالْيَوْمِ الْآخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِينَ ③

يُخَادِعُونَ اللَّهَ وَالَّذِينَ آمَنُوا ۚ وَمَا  
يُخَادِعُونَ إِلَّا أَنفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ④

فِي قُلُوبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللَّهُ مَرَضًا  
وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۚ هَٰ بِمَا كَانُوا  
يَكْذِبُونَ ⑤

وَإِذَا قِيلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوا فِي الْأَرْضِ  
قَالُوا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُونَ ⑥

لَا أَنَّهُمْ هُمُ الْبَاسِقُونَ وَلَكِن لَّا يَشْعُرُونَ ⑦

সূরাঃ বাকারাহ্, মাদানী

(আয়াতঃ ২৮৬, রুকু'ঃ ৪০)

আল্লাহর নামে শুরু করছি, যিনি পরম  
করুণাময় ও অতি দয়ালু।

১. আলিফ-লাম-মীম

২. এটা ঐ গ্রন্থ যার মধ্যে কোনরূপ  
সন্দেহ নেই; আল্লাহ ভীরুদের  
(পরহেজগারদের) জন্যে এ গ্রন্থ  
হিদায়াত বা মুক্তিপথের দিশারী।

৩. যারা অ-দৃষ্ট বিষয়গুলোতে বিশ্বাস  
স্থাপন করে, এবং নামায প্রতিষ্ঠিত  
করে ও আমি তাদেরকে যে জীবনো-  
পকরণ দান করেছি তা হতে ব্যয়  
করে থাকে।

৪. এবং যারা তোমার প্রতি যা  
অবতীর্ণ করা হয়েছে ও তোমার পূর্বে  
যা অবতীর্ণ করা হয়েছিল, তদ্বিষয়ে  
বিশ্বাস স্থাপন করে এবং পরকালের  
প্রতি যারা দৃঢ় বিশ্বাস রাখে।

৫. এরাই তাদের প্রভুর পক্ষ হতে  
প্রাপ্ত হিদায়াতের উপর প্রতিষ্ঠিত  
রয়েছে এবং এরাই সফলকাম।

سُورَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ

أَيَّاهَا ٢٨٦ رُكُوعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

الم ①

ذَٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ ۚ فِيهِ  
هُدًى لِّلْمُتَّقِينَ ②

الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيمُونَ  
الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنفِقُونَ ③

وَالَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْكَ وَمَا  
أُنزِلَ مِن قَبْلِكَ ۚ وَبِالْآخِرَةِ هُمْ  
يُوقِنُونَ ④

أُولَٰئِكَ عَلَىٰ هُدًى مِّن رَّبِّهِمْ ۚ وَأُولَٰئِكَ هُمُ  
الْمُفْلِحُونَ ⑤

১। এই ধরণের অক্ষরগুলিকে হুরূফ-আল মুকাত্তা'আত (বিচ্ছিন্ন বর্ণমালা) বলা হয়। এগুলিকে পৃথক পৃথকভাবে পড়া হয়। কুরআন মজিদের বহু সূরার (উনত্রিশটি সূরার প্রথমে) প্রারম্ভে এরূপ হুরূফ বা অক্ষর ব্যবহৃত হয়েছে। এর অন্তর্নিহিত তাৎপর্য আল্লাহই অবগত আছেন। (তাফসীর ইবনে কাসীর)

২। ইবনে উমর (রাযিআল্লাহু আনহুমা) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেনঃ রাসুলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেনঃ ইসলামের ভিত্তি পাঁচটি স্তম্ভের উপর স্থাপিতঃ (১) এ সাক্ষ্য দেয়া যে, আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন মা'বুদ নেই এবং মুহাম্মাদ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আল্লাহর রাসূল। (২) নামায কয়েম করা। (৩) যাকাত প্রদান করা। (৪) হজ্জ পালন করা। (৫) রমজান মাসে সিয়াম (রোজা) পালন করা। (বুখারী, হাদীস নং ৮)

## সূরাঃ নাস, মাক্কী

(আয়াতঃ ৬ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে  
(শুরু করছি)

## سُورَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّاهَا ٦ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ١

مَلِكِ النَّاسِ ٢

إِلَهِ النَّاسِ ٣

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ٤

الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ٥

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ٦

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি মানুষের  
প্রতিপালকের, ১

২. যিনি মানবমন্ডলীর বাদশাহ।

৩. যিনি মানবমন্ডলীর প্রকৃত মা'বুদ।

৪. আত্মগোপনকারী কুমন্ত্রণাদাতার  
অনিষ্ট হতে, ২৫. যে লোকদের অন্তরে কুমন্ত্রনার  
উদ্রেক করে।৬. জ্বিনের মধ্য হতে অথবা মানুষের  
মধ্য হতে।

১। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) থেকে বর্ণনা করেছেন, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) যখন বিছানায় আসতেন, তখন আপন দু'হাতের তালুতে 'কুলহুআল্লাহু আহাদ' এবং সূরা নাস ও সূরা ফালাক পড়ে দম করতেন। তারপর উভয় কজির তালু মুখের ওপর মুছে নিতেন আর দেহের যতটুকু হাত দু'খান পৌছতো ততটুকুতে হাত বুলিয়ে দিতেন। আয়েশা (রাযিআল্লাহু আনহা) বলেছেন, যখন রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) অসুস্থ হতেন, তখন আমাকে অনুরূপভাবে করতে হুকুম দিতেন। ইউনুস বলেছেন, ইবনে শিহাব যখন তাঁর বিছানায় যেতেন, তখন তাঁকে অনুরূপ করতে আমি দেখতাম। (বুখারী, হাদীস নং ৫৭৪৮)

২। আবু হুরাইরা (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত, রাসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বলেছেন, জাহান্নামকে কামনা-বাসনা দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। আর জান্নাতকে বিপদ-মুসীবত দ্বারা ঢেকে রাখা হয়েছে। (বুখারী, হাদীস নং ৬৪৮৭)

৩. তিনি কাউকে জন্ম দেননি এবং  
তাঁকেও জন্ম দেয়া হয়নি, ১

৪. এবং কেও তাঁর সমকক্ষ নয়।

## সূরাঃ ফালাক, মাক্কী

(আয়াতঃ ৫ রুকু'ঃ ১)

দয়াময়, পরম দয়ালু আল্লাহর নামে  
(শুরু করছি)

لَمْ يَلِدْ ۖ وَلَمْ يُولَدْ ١

وَلَمْ يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ٢

سُورَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ

أَيَّاهَا ٥ رُكُوعًا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ١

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ٢

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ٣

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ٤

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ٥

১. বলঃ আমি আশ্রয় নিচ্ছি ঈশ্বার  
প্রভুর,২. তিনি যা সৃষ্টি করেছেন তার অনিষ্ট  
হতে,৩. অনিষ্ট হতে অন্ধকার রাত্রির যখন  
তা আচ্ছন্ন হয়;৪. এবং অনিষ্ট হতে গিরায় ফুঁকদান  
কারিণীর।৫. এবং হিংসকের অনিষ্ট হতেও  
যখন সে হিংসা করে।

১। মু'আয ইবনে জাবাল (রাযিআল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) [তাকে] বললেন হে মু'আয, তুমি কি জানো বান্দার কাছে আল্লাহর কি হক আছে? মু'আয বললেন, আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, (বান্দার কাছে আল্লাহর হক হলো) সে তার ইবাদত বা দাসত্ব করবে এবং তার সাথে অন্য কিছুকে অংশীদার বানাবে না। তিনি [নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)] আবার বললেন, তুমি কি জানো আল্লাহর কাছে বান্দার হক কি? মু'আয ইবনে জাবাল বললেন, বিষয়টি আল্লাহ ও তাঁর রাসূলই ভালো জানেন। নবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, আল্লাহর কাছে বান্দার হক হলো আল্লাহ কর্তৃক বান্দাকে আযাব না দেয়া। (বুখারী, হাদীস নং ৭৩৭৩, ৭৩৭৪, ৭৩৭৫)